ISSN: 2349-6002

भारतीय ज्ञान-परम्परा : संस्कृत भाषा के संदर्भ में

डॉ. सुरेश बारैया
सहायकाचार्य, सरकारी विनयन एवं वाणिज्य महाविद्यालय, घोघा
doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-189747-459

Abstract- भारतीय ज्ञान-परम्परा (Indian Knowledge System—IKS) विश्व की सबसे प्राचीन, सतत्, अन्तर्दृष्टिपरक तथा बहुशाखीय बौद्धिक विरासतों में से एक है। यह परम्परा केवल आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं, बल्कि भाषाशास्त्र, गणित, चिकित्सा, नीतिशास्त्र, पर्यावरण, मनोविज्ञान, शिक्षा, कला, साहित्य, स्थापत्य, कृषि-विज्ञान, अन्तरिक्ष-ज्ञान, समाज-दर्शन आदि विविध क्षेत्रों को समाहित करती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में IKS का ऐतिहासिक विकास, प्रमुख ज्ञान-शाखाएँ, कार्यप्रणाली, वैज्ञानिकता, तथा आधुनिक भारत में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। साथ ही IKS की आलोचना, चुनौतियाँ और पुनर्जीवन की संभावनाओं पर शोधपरक चर्चा की गयी है।

पूर्वभूमिका:

भारतीय ज्ञान-परम्परा (Indian Knowledge System – IKS) विश्व की उन प्राचीनतम और निरन्तर प्रवहमान परम्पराओं में से है, जिसने ज्ञान को केवल "सूचना" या "तथ्य" न मानकर "जीवन-बोध" के रूप में परिभाषित किया। भारतीय दृष्टिकोण में ज्ञान वह है जो–

- आत्मा को प्रकाशित करे,
- जीवन-पथ को संतुलित बनाए,
- समाज में समन्वय उत्पन्न करे,
- प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करे,
- और अंततः मानव को सत्य-अवधारणा तक पहुँचाए।

भारतीय ज्ञान का स्वरूप "समग्र" (Holistic) है–विज्ञान, दर्शन, चिकित्सा, कला, पर्यावरण, सामाजिक शासन, आध्यात्म, गणित, भाषा, नीतिशास्त्र–इन सभी को एक ही ताने-बाने में देखा गया है। पाश्चात्य ज्ञान-व्यवस्था जहाँ विश्लेषण और भौतिकवाद पर आधारित रही, वहीं भारतीय परम्परा में ज्ञान "अनुभव, तप, साधना, तर्क और प्रतीति" का संयुक्त परिणाम माना गया।[१]

भारतीय ज्ञान-परम्परा के पाँच महत्त्वपूर्ण आयामों–

1. वेद-उपनिषद,
2. षड्दर्शन,
3. आयुर्वेद,
4. गणित-खगोल-विज्ञान,
5. कला-वास्तु-संगीत,

का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है।

1. वैदिक परम्परा: ज्ञान का प्रथम स्रोत

1.1 वेदों का स्वरूप

वेद मानव-रचित नहीं, अपितु "अपौरुषेय"–ऋषियों की ध्यानावस्था में अनुभूत ज्ञान माने गए हैं। "वेद" शब्द "विद्" धातु से बना है, जिसका अर्थ है– ज्ञान, विज्ञान, प्रकाश और अनुभूति।

चारों वेद–

1. ऋग्वेद (ज्ञान)
2. सामवेद (संगीत)
3. यजुर्वेद (कर्म, समाज)
4. अथर्ववेद (चिकित्सा, विज्ञान)

मानव-जगत के प्रत्येक क्षेत्र के ज्ञान का प्रथम आधार हैं।

1.2 वैदिक विज्ञान

(क) ब्रह्माण्ड-विज्ञान- ऋग्वेद का नासदीय सूक्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति को एक दार्शनिक-वैज्ञानिक शैली में प्रस्तुत करता है–

"नासदासीन्नो सदासीत्तदानीम्..."[२] यह "Cosmology of Origin" का विश्व का प्राचीनतम वर्णन माना जाता है।

(ख) पर्यावरण-दृष्टि- वेद पृथ्वी को "माता" संबोधित करते हैं–

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" यह पर्यावरणीय नैतिकता का सर्वोच्च रूप है।

(ग) चिकित्सा-विज्ञान- अथर्ववेद में १५० से अधिक औषधीय वनस्पतियों का विवरण है। Modern Pharmacognosy में इनके कई गुण सत्यापित हुए हैं।[३]

1.3 उपनिषद: ज्ञान का रहस्य

उपनिषद वेदों का दार्शनिक सार हैं। इनका मुख्य लक्ष्य है–आत्मा और ब्रह्म की एकता का बोध।

मुख्य महावाक्य–

- "अहं ब्रह्मास्मि"
- "तत्त्वमसि"
- "प्रज्ञानं ब्रह्म"

समस्त वेदान्त का आधार बनते हैं।

उपनिषद– चेतना, मनोविज्ञान, प्राण-ऊर्जा, ध्यान, मृत्यु-अमरत्व, तत्वमीमांसा जैसे गहन विषयों पर चर्चा करते हैं। आधुनिक Cognitive Science इन्हीं विषयों को अपने ढँग से अन्वेषित कर रहा है।[४]

2. षड्दर्शन: भारतीय तर्क-दर्शन की वैज्ञानिक परम्परा

भारतीय दर्शन के छह विद्यालय–सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व-मीमांसा, उत्तर-मीमांसा–ज्ञान के भिन्न-भिन्न आयामों का व्यवस्थित विश्लेषण करते हैं।

2.1 सांख्य - तत्त्वों का विज्ञान

कपिल मुनि का सांख्यदर्शन भारतीय Cosmology का सबसे प्राचीन वैज्ञानिक मॉडल प्रस्तुत करता है।

मुख्य तत्त्व–

- *पुरुष* (शुद्ध चेतना)
- *प्रकृति* (ऊर्जा-तत्त्व)
- तीन गुण (सत्त्व, रजस्, तमस्)

प्रकृति के असंतुलन से सृष्टि प्रकट होती है। सांख्य २४ तत्त्वों की विस्तृत सूची देता है, जो आज के न्यूरो-मनोविज्ञान और कॉस्मोलॉजी से आश्चर्यजनक समानता रखती है।[५]

2.2 योग - चित्त का वैज्ञानिक अनुशासन

पतञ्जलि का योगसूत्र बताता है– "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।"

योग– शरीर की स्थिरता, प्राण का संतुलन, मन का अनुशासन, चेतना का विस्तार प्रस्तुत करता है।

आधुनिक चिकित्सा-शोध सिद्ध करते हैं कि योग–

- न्यूरॉन्स की कार्यप्रणाली सुधारता है।
- ब्रेन-वेव अल्फा/थीटा अवस्था में लाता है।
- तनाव-हार्मोन कम करता है।
- इम्युनिटी बढ़ाता है।[६]

2.3 न्याय - प्रमाण और तर्कशास्त्र

गौतम ऋषि का न्यायदर्शन भारतीय तर्क का आधार है। इसके चार प्रमाण–

प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान प्रमाण, उपमान प्रमाण एवं शब्द प्रमाण।

आज की ज्ञानमीमांसा में "sources of knowledge" के रूप में स्थापित हैं। न्याय का पाँच-अवयवी अनुमान (Indian Syllogism) Aristotelian Logic से अधिक विकसित माना जाता है।[७]

2.4 वैशेषिक - पदार्थ और परमाणु

कणाद मुनि का वैशेषिकदर्शन विश्व को परमाणुओं (Atoms) से बनी एक संरचना के रूप में देखता है। यह "Atomic Theory" Dalton से हजारों वर्ष पुराना है। वैशेषिक छह पदार्थ बताता है–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय। यह भारतीय भौतिक-विज्ञान (Indian Physics) का आधार माना जाता है।[८]

2.5 मीमांसा - भाषा और कर्म

पूर्व-मीमांसा भाषा के अर्थ, वाक्य-विज्ञान और शब्द-ऊर्जा पर गहन शोध प्रस्तुत करती है। मीमांसा के अनुसार– वाक्य नित्य ऊर्जा है, जिसका प्रभाव संसार में वास्तविक होता है। आधुनिक भाषा विज्ञान में इसे "Speech Act Theory" कहते हैं।[९]

2.6 वेदान्त - अद्वैत चेतना का विज्ञान

वेदान्त चेतना को एकमात्र सत्य मानता है– "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या।" अद्वैत का सिद्धान्त आधुनिक Quantum Consciousness Theory और Unified Field Hypothesis की दिशा में प्रेरक माना जा रहा है।[१०]

3. आयुर्वेद: भारतीय चिकित्सा-विज्ञान का समग्र मॉडल

आयुर्वेद मानव-जीवन को– शरीर, मन (मनस), और आत्मा इन तीनों का संयुक्त रूप मानता है।

3.1 त्रिदोष सिद्धान्त

मानव-शरीर तीन दोषों– वात, पित्त और कफ के संतुलन पर आधारित है।

यह मॉडल आधुनिक "Psychosomatic Medicine" से अत्यंत निकट है, जहाँ शरीर और मन की परस्पर क्रिया रोगों का कारण मानी जाती है।

3.2 चिकित्सा और औषधियाँ

चरक और सुश्रुत संहिता में– रोग-विज्ञान, शल्य-चिकित्सा, नाड़ी-परीक्षण, औषध-निर्माण, पुनरुत्थान चिकित्सा (Regenerative Medicine) पर अद्भुत ज्ञान निर्देश है। इसीलिए सुश्रुत को "Father of Surgery" कहा गया है।[११]

3.3 धातु-चिकित्सा और रसशास्त्र

रसशास्त्र में– सोना, चाँदी, ताँबा, पारा, अभ्रक आदि को शुद्ध करने व औषधीय रूप में प्रयोग करने की पद्धतियाँ वर्णित हैं। यह "Nanomedicine" का प्राचीन भारतीय स्वरूप माना जाता है।[१२]

4. गणित और खगोल-विज्ञान

भारत गणित और ज्योतिर्विज्ञान का विश्व-नेता रहा है।

4.1 शून्य और दशमलव प्रणाली

आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त ने– शून्य का सिद्धान्त, दशमलव प्रणाली, बीजगणित, त्रिकोणमिति आदि का आधार स्थापित किया। शून्य (0) ही आधुनिक कंप्यूटर-विज्ञान और डिजिटल टेक्नोलॉजी की जड़ है।

4.2 आर्यभट्ट का खगोल-विज्ञान

आर्यभट्ट ने कहा– पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, ग्रहों की गति केन्द्राभिमुख बल से होती है और सूर्यग्रहण चन्द्रमा की छाया से होता है।[१३]

ये विचार यूरोपीय विज्ञान के हजारों वर्ष पूर्व के हैं।

4.3 पिंगल का छन्द-अनुसंधान (Binary System)

पिंगल मुनि (लगभग २०० ई.पू.) ने बाइनरी गणना (०–१) के सिद्धान्त का प्रथम उल्लेख "छन्दः-शास्त्र" में दिया। आधुनिक कंप्यूटर-प्रणाली इसी पर आधारित है।[१४]

5. कला, संगीत और वास्तु:-

5.1 भारतीय शास्त्रीय संगीत

सामवेद से उत्पन्न संगीत को "नाद-योग" कहा जाता है– ध्वनि = ऊर्जा = चेतना भारतीय रागों का

भावनात्मक और चिकित्सीय प्रभाव प्रमाणित हो चुका है।

5.2 नाट्यशास्त्र

भरतमुनि का "नाट्यशास्त्र"– नाटक, नृत्य, संगीत, रस और अभिनय का विश्व का प्रथम वैज्ञानिक ग्रन्थ है।[१५] "रस-सिद्धान्त" आधुनिक Psychology के "Emotional Theory" के समान माना जाता है।

5.3 वास्तुशास्त्र

वास्तु– दिशाएँ, वायु, सूर्य, जल, ऊर्जा-प्रवाह के समन्वय का विज्ञान है। यह "Bio-energetic Architecture" का प्राचीन रूप है।

6. भारतीय ज्ञान-परम्परा की आधुनिक प्रासंगिकता

आज विश्व IKS को–

- Holistic Health
- Mindfulness
- Environmental Ethics
- Sustainable Architecture
- Non-dual Consciousness
- Quantum Philosophy
- Traditional Ecological Knowledge

के रूप में पुनर्परिभाषित कर रहा है।

भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल सिद्धान्त– "सर्वे भवन्तु सुखिनः" मानव मात्र के कल्याण का मार्ग दिखाता है।

निष्कर्ष (Conclusion) :-

भारतीय ज्ञान-परम्परा एक जीवित सभ्यता की धरोहर है, जहाँ– विज्ञान और अध्यात्म,, तर्क और अनुभव, शरीर और चेतना, प्रकृति और समाज आदि एक-दूसरे के पूरक हैं। वेदों का दार्शनिक ज्ञान, उपनिषदों का आत्म-विज्ञान, दर्शनों का तर्क-विज्ञान, आयुर्वेद का समग्र स्वास्थ्य मॉडल, गणित-खगोल का वैज्ञानिक योगदान, नाट्य-संगीत-वास्तु की सौन्दर्यदृष्टि–यह सब मिलकर भारत को "विश्वगुरु" बनाते हैं।

आज की दुनिया में, जहाँ मानसिक तनाव, पर्यावरण संकट, सामाजिक असंतुलन और अस्थिरता बढ़ रही है, भारतीय ज्ञान-परम्परा मानवता को एक संतुलित, जागरूक और सतत मार्गदर्शन प्रदान करती है।

भारतीय ज्ञान-परम्परा केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि समकालीन अनुसंधान, नवाचार और मानव-कल्याण के लिए एक समृद्ध आधार है। इसका स्वभाव वैज्ञानिक, तर्कसंगत, जीवन-सापेक्ष और बहुविषयी है। आधुनिक शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, पर्यावरण-प्रबन्धन और वैश्विक नीति-निर्माण में IKS के सिद्धान्त स्थिर, समग्र और मानवकेन्द्रित विकल्प प्रस्तुत कर सकते हैं।

अतः IKS का अध्ययन केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रयास नहीं, बल्कि भावी भारत की ज्ञान-सम्पदा को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता भी है।

संदर्भ :

[1] Max Muller, *The Six Systems of Indian Philosophy*, London: Longmans, 1899.
[2] *Rigveda Samhita* 10.129 — नासदीय सूक्त (आर्य समाज संस्करण)।
[3] Dash, Bhagwan. *A Textbook of Ayurveda*. Concept Publishing, 1999.
[4] Kuppuswamy, B. *Elements of Ancient Indian Psychology*. Delhi University Press, 1985.
[5] Larson, Gerald. *Samkhya: A Dualist Tradition in Indian Philosophy*. Chicago, 1969.
[6] Harvard Medical School Report, "Benefits of Yoga & Meditation", 2018.
[7] Matilal, B.K. *The Navya-Nyāya Doctrine of Negation*. Harvard Oriental Series, 1968.

[8] Chattopadhyaya, D. *History of Science and Technology in Ancient India*, 1982.

[9] Jha, V.N. *The Philosophy of Mimamsa*, Delhi University, 1998.

[10] Amit Goswami, *The Self-Aware Universe*, Penguin, 1993.

[11] Bhishagratna, K. *The Sushruta Samhita*, Calcutta, 1911.

[12] Sharma, P.V. *Rasa Shastra*, Chaukhamba, 1997.

[13] K.S. Shukla, *Aryabhatiya of Aryabhata*, ICHR, 1976.

[14] Datta, B. & Singh, A.N. *History of Hindu Mathematics*, 1935.

[15] Bharatmuni, *Natyashastra*, (अभिनवगुप्त टीका सहित)।